Hindi translation of the original in English

by

Kamini Upadhyay

Edited by

Jaya Rathore

Vetted by

Adesh Kumar

आज़ादी का मर्म

(न्यूयॉर्क से लेखक का अपने देशवासियों के नाम एक पत्र)

जब आज़ादी हमारी गतिविधियों को मज़बूती और सृजन को विस्तार देने वाला आन्तरिक विचार नहीं रहकर, केवल बाहरी परिस्थिति बन कर रह जाती है तो ऐसा लगता है कि कोई खुले आकाश में आँखों पर पट्टी बाँध कर खड़ा हो।

पश्चिम की अपनी हालिया यात्राओं में मैंने महसूस किया है कि वहाँ एक विचार के रूप में आज़ादी कमज़ोर और निष्प्रभावी हो गई है। नतीजतन लोगों के राजनीतिक और सामाजिक रिश्तों में दमन और ज़बरदस्ती की भावना तेज़ी से फैलने लगी।

राजशाही के युग में राजा हमेशा षड्यंत्रों के मायाजाल से घिरा रहता था। राजा को अपने निजी प्रयोजनों के साधन के रूप में इस्तेमाल करने के लिए दरबार अन्तहीन झूठी फुसफुसाहटों और चुगलियों से भरे पड़े रहते थे, और दरबारियों की मिलीभगत से षड्यंत्र रचे जाते थे और योजनाएँ बनाई जाती थीं।

वर्तमान युग में षड्यंत्र एक व्यापक भूमिका निभाता है और पूरे देश को प्रभावित करता है। लोग झूठी आशाओं के नशे में चूर हैं और उन्हें जानबूझ कर उपजाए हुए त्रास के द्वारा निराशाजनक कार्यों के लिए उकसाया जाता है; उनकी अच्छी भावनाओं का विवादास्पद पाखण्डों के कुटिल माध्यमों से शोषण किया जाता है, चापलूसी की मदहोशी में उनकी जेबें खाली कर ली जाती है, धन और बेईमानी की कूटनीतिक साजिशों से उनकी मानसिकता को प्रभावित किया जाता है।

पुराने ज़माने में राजा को ये समझने दिया जाता था कि वह दुनिया का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति है। निसन्देह अन्य व्यक्तियों की तुलना में राजा के पास ज़्यादा स्वतंत्रता थी परन्तु वे उसके लिए एक भव्य मायावी जेल बना दिया करते थे।

अब यही सब पश्चिम के लोगों के साथ हो रहा है। वे ये सोच कर खुश हो रहे हैं कि वे स्वतंत्र हैं और उनके हाथों में संप्रभु शक्ति है। लेकिन यह शक्ति मतलब के मेज़बानों (पश्चिमी लोगों) द्वारा लूट ली जाती है और उनकी आज़ादी रूपी घोड़े को पकड़कर अस्तबल में बाँध लिया जाता है। आमजन को आभासी स्वतंत्रता का आनन्द लेने की अनुमति होती है जबकि वास्तविक आज़ादी पर हर तरफ से कटौती कर दी जाती है। उनके विचारों को संगठित/व्यवस्थित स्वार्थों के अनुसार नियोजित किया जाता है; विचारों के चयन और मान्यताओं के निर्माण को या तो दण्डात्मक बलों द्वारा या निरन्तर असत्य आग्रहों से अवरुद्ध किया जाता है; और उन्हें सम्मोहक जुमलों की आभासी दुनिया में रखा जाता है। असल में लोग ऐसी शक्ति का भण्डार बन गए हैं जिसके आस-पास ऐसे दुस्साहसी लोगों का समूह है जो रहस्यमयी तरीके से अपने स्वार्थों के लिए इसकी दीवारों को खोखला कर रहे हैं।

इस प्रकार मेरे लिए यह और अधिक स्पष्ट हो गया है कि पश्चिम के वातावरण में स्वतंत्रता का आदर्श क्षीण हो गया है। यह मानसिकता एक ऐसे गुलाम-मालिक रखने वाले धनिक स्वामियों के समुदाय की है, जिसमें अपने नीरस व्यावसायिक और राजनीतिक दिनचर्या से बन्धे हुए लोगों की एक पंगु भीड़ है। यह आपसी अविश्वास और भय की मानसिकता है। अमानवीयता और अन्याय के जिन भयावह दृश्यों से हम परिचित होते जा रहे हैं, ऐसे मनोविज्ञान का परिणाम है जो आतंक से सम्बद्ध है। कोई भी क्रूरता, कायरता की क्रूरता की तुलना में अपनी उग्रता में कुरूप नहीं हो सकती। घबराहट और सन्देह रूपी प्रेत उन लोगों का लगातार पीछा करते रहते हैं जिन्होंने लाभ कमाने के जुनून और सत्ता के नशे में अपनी आत्मा को कुर्बान कर दिया है, और इसलिए जहाँ वे कम-से-कम डरते हैं वहाँ वे निर्दयी भी होते हैं। वे दूसरों को स्वतंत्रता की अनुमति देने में नैतिक रूप से अक्षम हो जाते हैं, और शक्तिशाली होने के साथ एहसान करने के लिए उत्सुकता में वे न केवल राजनीतिक जुए में अपने स्वयं के सहयोगियों द्वारा किए गए अन्याय पर भरोसा करते हैं, बल्कि इसमें भाग भी लेते हैं। किसी भी कीमत पर अपने लाभों की सुरक्षा की सतत चिन्ता में स्वतंत्रता और न्याय के लिए प्यार पर तब तक प्रहार

होते रहते हैं, जब तक कि वे खुद के लिए और दूसरों के लिए स्वतंत्रता को त्याग देने के लिए तैयार नहीं हो जाते।

पश्चिम के मेरे अनुभवों ने, जहाँ मुझे पैसे की विशाल शक्ति और संगठित प्रचार (organised propaganda) का एहसास हुआ, — हर जगह छलावरण के परदे के पीछे काम करना, अविश्वास, कायरता और विद्वेष का वातावरण निर्मित करना,— मुझे इस सच्चाई ने गहराई से प्रभावित किया कि वास्तविक स्वतंत्रता मन और आत्मा की होती है; यह कभी भी बाहर से हमारे पास नहीं आ सकती है। स्वतंत्रता केवल उसी के पास है जो आदर्श रूप से खुद स्वतंत्रता से प्यार करता है और इसे दूसरों तक विस्तारित कर खुश होता है। वह जो दासों को रखने का ख्याल करता है, वह निश्चित ही अपने को उस जंजीर से बाँध लेता है; वह जो दूसरों के बहिष्कार के लिए दीवारें बनाते हैं वे अपने स्वयं की पूरी आज़ादी के बीच दीवार बना देते हैं; जो दूसरों की स्वतंत्रता पर अविश्वास करते हैं वे इस पर से खुद अपने नैतिक अधिकार खो देते हैं। आगे पीछे वे खुद भौतिक और नैतिक दासता के जाल में फँसा दिए जाते हैं।

इसलिए मैं अपने देशवासियों से यह आग्रह करूँगा कि वे खुद से यह पूछें कि यदि वे जिस प्रकार की स्वतंत्रता की आकांक्षा रखते हैं, क्या वह बाहरी परिस्थितियों में से एक है? क्या यह हस्तान्तरित की जा सकने वाली वस्तु है? क्या उन्हें स्वतंत्रता से सच्चा लगाव है? क्या इसमें उनकी अपनी आस्था है? क्या वे अपने समाज में, अपने बच्चों के दिमाग में मानवीय गरिमा के आदर्श पर अन्यायपूर्ण और अतार्किक प्रतिबन्धों से निर्बाध रूप से बढ़ने के लिए, स्थान देने के लिए तैयार हैं?

क्या हमने अपने सामाजिक दर्जों/वर्गों की दीवारों को विस्तृत रूप से स्थाई नहीं बनाया है? हमें उनकी विशिष्टता पर दृढ़तापूर्वक गर्व है। हम इस बात पर शेखी बघारते हैं कि इस दुनिया में, कोई अन्य समाज नहीं बल्कि हमारे अपने समाज में सदस्यों के वर्गीकरण सबसे ऊपर हैं। फिर भी हमारे राजनीतिक आन्दोलन में हम आसानी से शासक व शासित के रिश्तों की अप्राकृतिकता को भूल जाते हैं जो हमें अपमानित करती है, यह तब वीभत्स/हिंसात्मक कार्य बन जाता है जब इसे कृत्रिम रूप से सैन्य उत्पीड़न के खतरे के तहत तय किया जाता है।

चेतना के पूरे ओज में, जब भारत ने अमर विचारों को जुबान दी, उनके बच्चों में सत्य को खोजने की निडर भावना थी। हमारे लोगों की आत्मा का महान महाकाव्य —महाभारत —हमें एक शानदार जीवन की अद्भुत दृष्टि देता है, जो कि खोज और प्रयोग की पूरी स्वतंत्रता से भरा है। जब बुद्ध का युग आया, तो इसने हमारे देश में मानवता को इसकी चरम गहराई तक द्रवित कर दिया। मन की स्वतंत्रता जो मानवता को खुद की सृष्टि करने से अभिव्यक्त हुई और पूरे एशिया महाद्वीप में इसकी समृद्धि हर जगह फैल गई। लेकिन भारत में जीवन के ह्रास के साथ सृष्टि की आत्मा मर गई। जड़/निष्क्रिय निर्माण के युग में यह और कठोर हो गई। एक विविध और लचीले समाज की जैविक एकता ने एक पारम्परिक क्रम को रास्ता दिया, जो बहिष्कार के अपने कठोर/निर्दयी कानून द्वारा अपने कृत्रिम चरित्र को साबित करता है।

मैं मानता हूँ कि जीवन की अपनी असमानताएँ हैं, लेकिन वे स्वाभाविक हैं और जीवन के कार्यों के साथ सामंजस्यपूर्ण हैं। सिर पैरों से अलग अपनी जगह रखता है, न कि किसी बाहरी व्यवस्था या ज़बरदस्ती की किसी साजिश के ज़रिए। यदि शरीर को अनिश्चित काल के लिए कलाबाज़ी करने के लिए मजबूर किया जाता है, तो भी सिर कभी भी पैरों के साथ अपने विशिष्ट कार्य का आदान-प्रदान नहीं करता। लेकिन क्या हमारे सामाजिक विभाजनों में जैविक कानून के समान अपरिहार्यता है? यदि हममें इस प्रश्न के लिए 'हाँ' कहने का साहस है, तो हम किसी विदेशी कौम को हमें एक राजनीतिक आदेश के अधीन करने के लिए दोषी कैसे ठहरा सकते हैं, जो उन्हें शाश्वत मानने के लिए बहकाते हैं?

एक अयोग्य प्रणाली के चंगुल में मानव को जकड़कर बलपूर्वक स्थिर रखते हुए, हमने जीवन और विकास के नियमों की अनदेखी की है। हमने जीवित आत्माओं को, परिस्थिति की अपने स्वाभाविक ढाँचे के अनुरूप ढालने और अपने हुनर में माहिर होने में असमर्थ बनाकर, एक स्थाई निष्क्रियता के लिए बाध्य कर दिया है। पतन के एक अन्धेरे दौर से जीवन के हमारे आदर्श को ग्रहण करते हुए हमने अपनी आत्मा की संवेदनशीलता को एक सुदूर अतीत के अचल भार से ढँक दिया है। हमने पिंजरबद्ध अवस्था की स्तुति के भव्य कर्मकाण्ड बनाए हैं, और अपने लोगों की जीवन्त भावनाओं के पंखों से सभी पर नोंच लिए हैं। हमारे सदियों के पतन और अपमान, हमारी राष्ट्रीय एकता

की अमूर्तता, बाहरी आपदाओं के समक्ष हमारी असहाय स्थिति और अपने भीतर हमारे अतार्किक आत्म-अवरोधों के कारण हमारे लिए सजा भयानक रही है। हमें यह एहसास ही नहीं है कि हमारी मूर्खता इतनी दुर्भाग्यपूर्ण हो गई कि युगों-युगों तक हमारे कदम डगमगाते रहे, इतिहास एक मात्र हादसा नहीं हो सकता, जिसे केवल एक और बाहरी दुर्घटना द्वारा ही हटाया जा सकता है।

जब तक आज़ादी में हमारा विश्वास सच्चा नहीं होगा, तब तक इसे सृजनशील होकर जानने के लिए, साहसपूर्वक इसके सभी जोखिमों को उठाते हुए भी न सिर्फ हम राजनीति में आज़ादी का दावा करने का अधिकार खो देते हैं, बल्कि हमारे पास अपनी पूरी ताकत के साथ इसे बनाए रखने की शक्ति भी नहीं रहती। तब यह एक पक्के नास्तिक को भगवान की सेवा का काम सौंपने जैसा होगा। और पुरुष, जो अपने स्वयं के भाइयों और बहनों को आन्तरिक शिशुओं के रूप में मानते हैं, जिनके व्यक्तिगत जीवन के सबसे घिसे-पिटे विवरणों पर कभी भी भरोसा नहीं किया जाता है – जो एक अन्ध मार्ग का अनुसरण करने में उत्पीड़न के क्रूर खतरे से हर कदम पर उन्हें मजबूर करते हैं, उनमें से कई को पाखण्ड व नैतिक जड़ता में बार-बार विफल होने पर अपनी वास्तविक और गम्भीर ज़िम्मेदारी की बुलन्दी तक जाने में असफलता मिलेगी। वे राजनीति में एक न्यायोचित स्वतंत्रता रखने और स्वतंत्रता के लिए लड़ने में असमर्थ होंगे।

पश्चिम की सभ्यता में मशीन का भाव है जिसे चलना ही चाहिए; और उस अन्धे आन्दोलन के लिए, मानव जीवन को ईंधन के रूप में पेश किया जाता है, जो भाप-शक्ति को बनाए रखता है। यह जड़ता के सक्रिय पहलू का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें स्वतंत्रता का आभास है, लेकिन स्वतंत्रता इसकी सच्चाई नहीं है, और इसलिए यह अपनी सीमाओं के भीतर और बाहर दोनों ओर दासता को जन्म देता है। भारत की वर्तमान सभ्यता में साँचे की विवशता है। यह कठोर नियमों की जकड़न में रहने वाले व्यक्तियों को निचोड़ता है, और इसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता का दमन केवल पुरुषों को सभी किस्मों और दर्जों की अधीनता के लिए मजबूर करना आसान बनाता है। इन दोनों परम्पराओं में जीवन को कुछ ऐसा पेश किया जाता है जो जीवन नहीं है; यह एक बलिदान है, जिसमें पूजा के लिए कोई भगवान नहीं है, और इसीलिए सर्वथा व्यर्थ है। पश्चिम ने निरन्तर अपने आध्यात्मिक नियंत्रण से अधिक यांत्रिक शक्ति का उत्पादन किया है, और भारत ने अपनी जीवन शक्ति से अधिक यांत्रिक नियंत्रण के एक तंत्र का उत्पादन किया है।